विनोबा दर्शन

विनोबा के साथ उनतालीस दिन

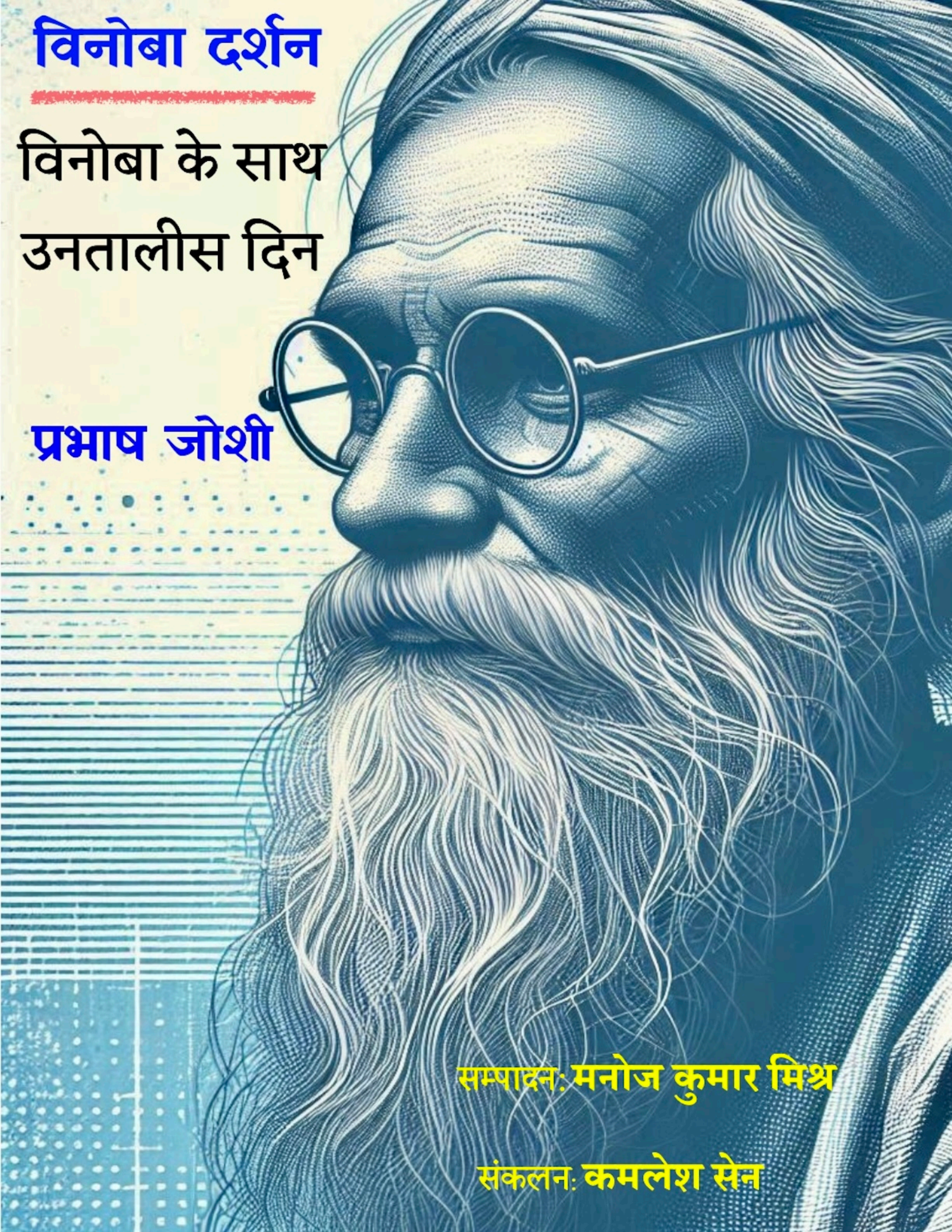

प्रभाष जोशी

सम्पादन: मनोज कुमार मिश्र

संकलन: कमलेश सेन

विनोबा दर्शन

विनोबा के साथ उनतालीस दिन

प्रभाष जोशी

संपादन

मनोज कुमार मिश्र

संकलन

कमलेश सेन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2024

क्रम

पुरोकथन 5

रामबहादुर राय

अपनी बात 28

मनोज कुमार मिश्र

विनोबा द्वारा प्रेम योग का नया मंत्र 35

इन्दौर में 80,000 सर्वोदय पात्र हो 54

भाषा की विविधता में ही एकता निहित 75

सर्वोदय पात्र से देश और जमाने के लायक लोग तैयार होंगे 96

गांधी विचारधारा रखने वाले 'शान्ति सैनिक' बनें 117

और कारवाँ चलता रहा... 138

मूल्य बदलना वास्तविक क्रान्ति 159

अघोषित मार्गों से बाबा की प्रथम पदयात्रा 181

इन्दौर-देवास मार्ग पर बाबा की यात्रा 203

आज सह-चित्त आवश्यक 225

आज प्रथम बार साढ़े पाँच बजे पदयात्रा का प्रारम्भ 246

कर्मचारियों को सरकार के प्रति वफादार रहना था 268

वर्षा के बाद भी बाबा की यात्रा 290

चौदहवें दिन की पदयात्रा 314

मजदूर क्षेत्र में बाबा का दूसरा पड़ाव 335

धीर हिमालय और प्यार की गंगा 358

उजले पहर में 379

मन्दी गति न पड़े, ओ राही 395

आवाज़ मेरी- बात सबकी 416

सफ़र की मंज़िल - सफ़र 437

वामन के तीन डग 458

मुझे चलना पसन्द है 479

बरसात, विचार और मन 501

खानगी चर्चाएँ और वफ़ादारी का प्रश्न 524

एक टूटी हुई कड़ी 546

एक त्योहार प्रारम्भ 554

असफ़ल और दिग्विजय - बाबा 576

अंजलि का गंगाजल 599

विद्यार्थी विश्व के मध्य बिन्दु 621

अन्तिम दिन का वियोग 643

जहाँ सारी संस्कृतियाँ एक हो गईं 665

विचारदान से श्रमदान तक 676

उजाला क्षितिज अँधेरा गगन 697

वाणी तत्काल फलदायिनीसिद्धि 718

पहाड़ियों की गोद और इन्द्रधनुष की छाँव 739

मेधा का मूल अर्थ 760

अन्तिम परस रस धार का 771

पुरोकथन

इस किताब की एक कहानी है। अपनी पढ़ाई बीच में छोड़कर प्रभाष जोशी जी सुनवानी महाकाल गाँव में रहने लगे थे। पाँच साल हो गए थे। वहाँ वे गांधीजी के प्रयोग में पूरे मन से रमे हुए थे। उन्हीं दिनों विनोबा जी की पदयात्रा इन्दौर पहुँचने वाली थी। *नई दुनिया* अखबार के नेतृत्वद्वय नरेन्द्र तिवारी और राहुल बारपुते के सामने बड़ा प्रश्न था कि कौन हो सकता है जो विनोबा जी की पदयात्रा को ढंग से रिपोर्ट करे। उनकी नजर युवा प्रभाष जोशी पर टिक गई, क्योंकि उनको पता था कि यह युवा गांधी प्रयोग में लगा है। उन्हें वहाँ से बुलाया गया। प्रभाष जी को भी यह नया काम अपने अनुकूल लगा। वे जो चाह रहे थे वह उन्हें दूसरी बार मिला। पहली बार तब ऐसा हुआ जब उन्होंने गांधी और विनोबा को पढ़ना शुरू किया। उन्होंने यह लिखा है कि 'जब गांधी और विनोबा को पढ़ने लगा तो यह समझकर मुझे अपार सन्तुष्टि मिलती कि उन्होंने वही लिखा है जो मैं चाह रहा था।'

इस किताब को बहुत पहले छपना चाहिए था। बहुत देर से ही सही, लेकिन सही समय पर *विनोबा के साथ उनतालीस दिन* उपलब्ध हो रहा है। यह किताब *विनोबा के साथ उनतालीस दिन* पत्रकार प्रभाष जोशी की रिपोर्टिंग का संकलन है। उनकी आरम्भिक पत्रकारिता का साक्ष्य है। आचार्य विनोबा भावे ने 1960 में इन्दौर के